ए होत है हम कारने, पिया पूरे मनोरथ मन।
इन समें की मैं क्यों कहूं, साथ सबे धंन धंन।।५८ ।।

यह सब हमारे मन की इच्छा पूरी करने के लिए होता था। इस समय के आनन्द का पारावार नहीं था, सब बड़े उमंग में थे।

बृज सारी करी दिवानी, और पिया तो वचिखिन।
जहां मिले तहां एही बातें, विनोद हांस रमन।।५९ ।।

श्री कृष्णजी ने अपने प्रेम के वशीभूत सारे ब्रज को दीवाना बना रखा है और वह बहुत चतुर हैं। जहां भी मिलते हैं गोपियों से हंसी-विनोद की ही बातें करते हैं।

नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन बछ जमुना बन।
थिर चर सब पसु पंखी, नित नित लीला नौतन।।६० ।।

नन्दजी, यशोदाजी, ग्वाल, गोपी, गायें, बछड़े, यमुनाजी, वन, पशु, पक्षी, चर तथा अचर रोज ही नई लीला करते हैं।

अब ए लीला कहूं केती, अलेखे अति सुख।
बरस अग्यारे खेले प्रेमें, सखियनसों सनमुख।।६१ ।।

अब इस लीला को कहां तक कहूं? यह बेशुमार सुख की लीला है। ग्यारह वर्ष तक बड़े प्रेम के साथ सखियों के साथ खेल किया।

एक दिन गौ चारने, पिउ पोहोंचे वृन्दावन।
गोवाल गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उतपन।।६२ ।।

एक दिन गाय चराने पियाजी वृन्दावन गए। ग्वाल सब गायें लेकर वापस आ गए। पीछे योगमाया का ब्रह्माण्ड बनाया।

ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्मांड।
एह कल्पांत करके, फेर उपज्यो अखंड।।६३।।

इतने दिन तक ब्रज की लीला कालमाया के ब्रह्माण्ड में की। फिर उसका प्रलय करके इस योगमाया में सबलिक ब्रह्म में उसे अखण्ड कर दिया।

सदा लीला जो बृज की, मैं कही जो याकी बिध।
अब कहूं वृन्दावन की, ए तो अति बड़ी है निध।।६४ ।।

इस तरह से ब्रज की लीला जो अखण्ड की है उसकी हकीकत है। अब आगे वृन्दावन की कहती हूं जो और बड़े आनन्द की लीला है।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ५३५ ।।

जोगमाया को प्रकरण

अब जोत पकरी न रहे, दूजा बेधिया आकास।
जाए लिया इंड तीसरा, जहां अखंड रजनी रास।।१ ।।

तारतम वाणी के ज्ञान की रोशनी अब रोके नहीं रुकती। क्षर ब्रह्माण्ड (कालमाया) के बाद हमने दूसरी ब्रज की लीला को योगमाया में देखा और अब इस तारतम वाणी के बल से तीसरे ब्रह्माण्ड सबलिक में पहुंचे, जहां हमारी अखण्ड रास की लीला हो रही है।

Nijanand App

इन दोऊ थें न्यारा मंडल, जाको कहियत हैं रास।
तहां खेल स्याम सखियनका, ए लीला अविनास।। २ ।।

यह ब्रह्माण्ड दोनों लीलाओं से न्यारा है जिसको रास कहते हैं। यहां पर सखियों के साथ श्री श्याम (कृष्णजी) अविनाशी अखण्ड लीला कर रहे हैं।

या ठौर जोगमाया रच्यो, सब सामग्री समेत।
तहां हद सब्द न पोहोंचही, तुमे तो भी कहूं संकेत।। ३ ।।

इस लीला की सम्पूर्ण सामग्री योगमाया की है। यहां का वर्णन क्षर ब्रह्माण्ड के शब्दों से बताना सम्भव नहीं है, फिर भी तुम्हें कुछ इशारे से बताती हूं।

जिनस जुगत कहूं केती, अनेक सुख अखंड।
जोगमायाए उपाया, कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड।। ४ ।।

इस योगमाया के ब्रह्माण्ड की सामग्री का कैसे वर्णन करूं? यह अनेक अखण्ड सुखों से भरपूर है। योगमाया में सारा ब्रह्माण्ड अखण्ड सुखों का ही है।

ए बानी नीके विचारियो, अंतर मांहें बाहेर।
तुमें जगाऊं कर जागनी, देखाए देऊं जाहेर।। ५ ।।

इस वाणी को अच्छी तरह से अन्दर-बाहर विचार करके देखना। हे साथजी! तुमको मैं जागृत करके दिखा देती हूं।

क्योंए न आवे सब्द में, जोगमाया की बिध।
तो भी देखाऊं कछुयक, लीला हमारी निध।। ६ ।।

योगमाया की हकीकत को शब्दों में लाना सम्भव नहीं है, फिर भी थोड़ा-सा अपनी लीला का वर्णन करती हूं।

हम देखे वृन्दावन इतथें, तहां भी खेलें पिया साथ।
करें विनोद नित नए, बनही मिने विलास।। ७ ।।

हम यहां से बैठे-बैठे वृन्दावन को देख रहे हैं। जहां हमने अपने धनी के साथ लीला की थी और रोज ही बड़ी खुशी के साथ वन में अनेक प्रकार से विलास की लीलाएं की थीं, जो लीला आज भी अखण्ड है।

काहूं न पाइए जोगमायाकी, हम बिना पेहेचान।
वासना पांचों अछर की, भले कहावें आप सुजान।। ८ ।।

हमारे बिना योगमाया की हकीकत कोई बता नहीं सकता। अक्षर की पांच वासनाएं भले ही चतुर सुजान हैं, फिर भी वह इसकी जानकारी नहीं रखतीं।

ए माया हमारियां, याके हमपे विचार।
और उपजे सब इनथें, ए हमारी आग्या- कार।। ९ ।।

यह माया दोनों हमारी हैं और इनकी जानकारी भी हमारे ही पास है। यह हमारी आज्ञा के अधीन हैं, जबकि बाकी संसार इनसे पैदा हुआ है।

Nijanand App

रासलीला पेहेले करी, जो मिने वृन्दावन।
आनंद-कारी जोगमाया, अविनासी उतपन।। १० ।।

वृन्दावन में पहले रास लीला की जो आनन्द देने वाली योगमाया में आज भी अखण्ड है।

जोगमाया की जुगत जुई, एक रस एक रंग।
एक संगे सदा रेहेना, अंगना एकै अंग।। ११ ।।

योगमाया की हकीकत अलग है। यहां सबको समान आनन्द है और यहां हम सब एक ही प्रीतम की अंगनाओं की लीला अखण्ड है।

आतम सदीवे एक है, वासना एकै अंग।
मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंड के रंग।। १२ ।।

हमारी सभी की आत्मा सदा से एक है और हम एक ही धनी की अंगना हैं। धनी का मूल आवेश योगमाया में आकर हमें अखण्ड सुख दे रहा है।

एक अंगे रंगे संगे, तो क्यों हुई अंतराए।
इन सब्द में है आंकड़ी, बिना तारतम समझी ना जाए।। १३ ।।

जब हम सब एक ही धनी के अंग हैं और एक साथ हमारी लीला होती है, तो फिर अन्तर्ध्यान क्यों हुए, यह एक भेद वाली बात है जो बिना तारतम वाणी के समझ में नहीं आ सकती।

आंकड़ी अंतरध्यान की, सो ए कहूं सनंध।
कोई न जाने हम बिना, इन तारतम के बंध।। १४ ।।

अन्तर्ध्यान की आंकड़ी की हकीकत कहती हूं, क्योंकि इसे हमारे बिना कोई नहीं जानता। तारतम वाणी के ज्ञान से ही इस आंकड़ी (गांठ) को मैं खोलती हूं।

जगाए आवेस लेयके, तब इत भए अंतरध्यान।
विलास विरह चित चौकस करने, याद देने घर धाम।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज ने हम दोनों (अक्षर और ब्रह्मसृष्टि) को योगमाया में मगन हुआ देखा, तो अपने आवेश को वापस खींच लिया। तब हम दोनों चौंके और श्री कृष्ण का स्वरूप अन्तर्ध्यान हो गया। श्री राजजी महाराज ने विलास की लीला, विरह की लीला तथा घर की याद दिलाने हेतु हमारे चित्त को सावधान किया।

जोगमाया की जुगत, और न जाने कोए।
और कोई तो जाने, जो कोई दूसरा होए।। १६ ।।

योगमाया की इस हकीकत को हमारे बिना और कोई नहीं जानता और कोई जान भी कैसे सकता है? वहां हमारे बिना कोई था ही नहीं।

जोगमायाए जाग्रत होए, जल जिमी वाए अगिन।
थिर चर सब पसु पंखी, तत्व सबे चेतन।। १७ ।।

योगमाया में जल, जमीन, हवा, अग्नि, चल, अचल, पशु-पक्षी तथा सभी तत्व जागृत और चेतन हैं।

Nijanand App

एक जरा तिन जिमी का, ताके तेज आगे सूर कोट।
सो सूरज दृष्टें न आवही, इन जिमी जरे की ओट।। १८ ।।

योगमाया की जमीन के एक छोटे से रेत के टुकड़े के सामने यहां की कालमाया के यह करोड़ों सूर्य भी नहीं टिक सकते। उस अंश के तेज की उपमा करोड़ों सूर्यों से भी नहीं दी जा सकती।

हेम जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त।
सोभा जो अविनास की, कही न जाए मुख हस्त।। १९ ।।

सोने और जवाहरात की भी उपमा दूं तो भी यह झूठे हैं। उस अखण्ड की शोभा का वर्णन यहां की झूठी जबान या कलम से नहीं हो सकता।

बरनन करूं एक पात की, सो भी इन जुबां कही न जाए।
कोट ससि जो सूर कहूं, तो एक पात तले ढंपाए।। २० ।।

योगमाया के एक पत्ते का वर्णन भी यहां की जबान से नहीं हो सकता। करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा एक पत्ते की रोशनी में छिप जाते हैं।

सुतेज ससि बन पसु पंखी, तत्व सबें सुतेज।
सुतेज थिर चर जो कछू, सुतेज रेजा रेज।। २१ ।।

यहां का चन्द्रमा, वन, पशु, पक्षी तथा सभी तत्व तेजमयी हैं। यहां के चल, अचल या जो कुछ भी है, के कण-कण में नूर ही नूर भरा है।

किरना बन जिमीय की, सामी किरना ससि प्रकास।
नूर हम पे खेले नूर में, प्रेमें पियासों रास।। २२ ।।

इस जमीन और वन की किरणें और सामने वहां के चन्द्रमा की किरणें सब नूरी हैं। हम भी बड़े प्रेम में मग्न होकर प्रेम से पिया के साथ रास की लीला खेलते थे जो लीला अखण्ड है।

वस्तर भूखन इन जिमी के, सो मुख कहे न जाए।
तो सुख इन सरूप के, क्यों कर इत बोलाए।। २३ ।।

इस जमीन के वस्त्र और आभूषणों की शोभा इस मुख से वर्णन नहीं हो सकती, तो फिर वहां के स्वरूपों की शोभा का वर्णन कैसे किया जाए?

इन सुख बातां बोहोत हैं, सो नेक कह्यो प्रकास।
पर ए भी जोगमाया मिने, जो कहियत हैं अविनास।। २४ ।।

यहां बहुत ही अखण्ड सुख है जिसकी थोड़ी-सी जानकारी दी है। योगमाया में होने के कारण से यह सदा अखण्ड है।

या ठौर लीला करके, हम घर आए सब मिल।
या इंड कल्पांत करके, फेर अखंड किए मिने दिल।। २५ ।।

यहां रास लीला करने के बाद योगमाया से हम वापस परमधाम आए तथा इस लीला को समाप्त कर केवल ब्रह्म (बुद्धि) से हटाकर अक्षर के हृदय (सबलिक ब्रह्म) में अखण्ड कर दिया।

Nijanand App

हम तो सब धाम आए, अछर आपने घर।
अखंड रजनी रास लीला, खेल होत या पर।। २६ ।।

हम सब अपने परमधाम में जागे और अक्षर ब्रह्म अक्षरधाम में जागे, परन्तु रास लीला की रात्रि अखण्ड होकर उसी तरह से सबलिक ब्रह्म में लीला आज भी हो रही है। हम, श्री राजजी और श्यामाजी उसमें नहीं हैं। केवल हमारे जीव अखण्ड हैं।

हमही खेले बृज रास में, हमही आए इत।
घरों बैठे हम देखहीं, एही तमासा तित।। २७ ।।

हम ही ब्रज रास में खेले और खेलने के बाद हम ही घर (परमधाम) आए। जहां बैठकर हम ही इस अखण्ड लीला को बैठे-बैठे देख रहे हैं।

देखे बृज रास नीके, खेल किया पर पर।
ले भोग विरह विलास को, हम आए निज घर।। २८ ।।

ब्रज रास के खेल को अच्छी तरह से देखकर तथा विलास और विरह के सुख-दुःख को देखकर हम घर (परमधाम) आए।

देखे दोऊ सुख दुख, तो भी कछुक रह्यो संदेह।
सत सरूपें तो फेर, मंडल रचियो एह।। २९ ।।

सुख-दुःख देखने पर भी कुछ चाहना बाकी रह गई, इसलिए सत् स्वरूप ने धनी के हुक्म से यह तीसरा कालमाया का जागनी का ब्रह्माण्ड रचा।

ए खेल किया हम वास्ते, हम देखन आइयां एह।
दोऊ के मनोरथ पूरनें, ए रच्या तमासा ले।। ३० ।।

यह खेल हमारे वास्ते रचा है और हम इसे देखने आई हैं। हम दोनों—ब्रह्म सृष्टी और ईश्वरी सृष्टी—की इच्छाएं पूरी करने के वास्ते ही यह नाटक रचा है।

खेल रचे सुपन के, देखाए मिने सुपन।
ए देखे हम न्यारे रहे, कोई और न देखे जन।। ३१ ।।

यह खेल सपने में बना है और सपने में ही हम देख रहे हैं। इस खेल को हम इससे अलग परमधाम में बैठकर देख रहे हैं और बाकी संसार के जीव इसको नहीं समझ पा रहे हैं।

ए खेल सोहागनियों को, देखाया भली भांत।
तारतम बुध प्रकास के, पूरी सबों की खांत।। ३२ ।।

ब्रह्मसृष्टियों को अच्छे तरीके से यह खेल दिखाया और फिर जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से घर की पहचान कराकर सबकी इच्छा पूरी की।

खेल देख्या जो हम, सो थिर होसी निरधार।
सारों मिने सिरोमन, होसी अखंड ए संसार।। ३३ ।।

इस खेल को चूंकि हमने देखा, इसलिए यह भी अखण्ड हो जाएगा। इस तरह से यह ब्रह्माण्ड सभी ब्रह्माण्डों में सर्वश्रेष्ठ हो जाएगा।

Nijanand App

भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर।
हम उठसी भेले सबे, जब जासीं हमारे घर।। ३४ ।।

अक्षर भगवान भी यहां पर हमारे साथ जागने के लिए आए हैं और हम दोनों एक साथ ही जागृत होंगे और अपने-अपने घर को जाएंगे।

प्रकास कह्यो मैं रास को, एह सुन्यो तुम सार।
अब महामती कहें सो सुनो, दया को विस्तार।। ३५ ।।

हे साथजी! अखण्ड रास की लीला की हकीकत को मैंने बताया जो सबसे श्रेष्ठ हकीकत है और इसका सार आपने सुना है। अब श्री महामति श्री राजजी महाराजजी की दया के विस्तार का वर्णन करती हैं, उसे सुनो।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५७० ।।

दया को प्रकरण

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड।
ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड।
सोहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूं।।टेक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मेरे पिया ने इस जागनी के ब्रह्माण्ड में जो दया की है, वह ब्रह्माण्ड में समाती नहीं है। अपने धनी के यह एहसान मैं कैसे भुला सकती हूं जो मेरे हाथों से ही उन्होंने सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड कराया है। हे सुन्दरसाथजी! पिया की कृपा का मैं कैसे बखान करूं?

अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर।
दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर।। २ ।।

धनी की कृपा धनी के स्वरूप जैसी ही अखण्ड सागर के समान है जिसमें मैं लिप्त हो गई (हिल-मिल गई)। धनी की कृपा के सागर में माया की एक बूंद भी नहीं है।

दया मुकट सिर छत्र चंवर, दया सिंघासन पाट।
दया सबों अंगों पूरन, सब हुओ दया को ठाट।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर का सिंहासन है, जिस पर उन्होंने मुझे बिठाया है। उनकी मेहर का ही मुकुट मेरे सिर पर शोभायमान है। मेहर का ही मेरे सिर पर छत्र है और मेहर के ही चंवर मेरे ऊपर डुलाए जाते हैं। इस प्रकार से मेरे सब अंगों में भी उनकी मेहर भरी है और सब मेहर का ही ठाट-बाट है।

अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए।
अंगीकार करी अंगना, सो देखे साथ सब कोए।। ४ ।।

अब राजजी महाराज की कृपा का वर्णन मैं तब करूं जब मेरे और उनके बीच में कोई अन्तर हो। उन्होंने मुझे अपनी अंगना के रूप में स्वीकार कर लिया है। इसे सब सुन्दरसाथ जान रहे हैं।

पल पल आवे पसरती, न पाइए दया को पार।
दूजा तो सब मैं मापिया, पर होए न दया को निरवार।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर पल-पल में फैलती है, इसलिए इस मेहर का शुमार नहीं है। बाकी तो सभी चीजों को मैंने शुमार में ले लिया पर धनी की मेहर का मैं निर्णय नहीं कर सकी।

Nijanand App